आदिवासी अस्मिता का प्रतीक

झारखंड के 'दिशोम गुरु' शिबू सोरेन का निधन

JMM और झारखंड की आत्मा में आज भी 'गुरुजी' की विचारधारा ज़िंदा है। उन्होंने जिस सामाजिक न्याय, भूमि अधिकार और आदिवासी सम्मान की लड़ाई लड़ी, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी रहेगी। शिबू सोरेन का जीवन एक संघर्षशील योद्धा की कहानी है। वे भारतीय लोकतंत्र में उन दुर्लभ नेताओं में से एक रहे जिन्होंने जमीनी आंदोलनों को संसद तक पहुँचाया।उनकी कमी न केवल झारखंड को, बल्कि पूरे देश को महसूस होगी।

४ अगस्त २०२५ की सुबह भारतीय राजनीति के एक युग का अंत हो गया। झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री और झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) के संस्थापक संरक्षक शिबू सोरेन, जिन्हें आदिवासी समाज में 'गुरुजी' या 'दिशोम गुरु' के नाम से जाना जाता था, का निधन हो गया। वे ८१ वर्ष के थे और लंबे समय से बीमार चल रहे थे।

दिल्ली के सर गंगा राम अस्पताल में उन्होंने अंतिम साँस ली। वे कई सप्ताह से किडनी संक्रमण और स्ट्रोक के बाद लाइफ सपोर्ट सिस्टम पर थे। उनके निधन की पुष्टि उनके बेटे और झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने की। उन्होंने X (पूर्व ट्विटर) पर लिखा -

'आदरणीय दिशोम गुरुजी हम सभी को छोड़कर चले गए हैं... आज मैं शून्य हो गया हूं।'

शिबू सोरेन का जन्म ११ जनवरी १९४४ को झारखंड (तत्कालीन बिहार) के दुमका ज़िले के नेमरा गाँव में हुआ। वे संथाल जनजाति से ताल्लुक रखते थे। उनके पिता की हत्या महाजनों ने कर दी थी, जब वे किसानों के अधिकार के लिए लड़ रहे थे। यह घटना ही शिबू सोरेन के जीवन की दिशा तय करने वाली बनी।

उन्होंने 'दिकू भगाओ आंदोलन' के ज़रिए बाहरी लोगों के ज़मीन हथियाने के खिलाफ आदिवासियों को एकजुट किया। १९७२ में उन्होंने झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) की स्थापना की, जिसने झारखंड को अलग राज्य बनाने के लिए लंबा संघर्ष किया। उनकी अगुवाई में यह आंदोलन इतना मजबूत हुआ कि १५ नवंबर २००० को झारखंड बिहार से अलग होकर भारत का २८वां राज्य बना।

राजनीतिक सफर, तीन बार मुख्यमंत्रीः

मार्च २००५ (९ दिन),
सितंबर २००८-जनवरी २००९
दिसंबर २००९-मई २०१०
८ बार लोकसभा सांसद और
दो बार राज्यसभा सदस्य

केंद्र में कोयला मंत्री भी रहे, उनका राजनीतिक जीवन संघर्षों से भरा रहा। झारखंड की राजनीति में वे जनभावनाओं के प्रतीक बने।

विवाद और न्याय

शिबू सोरेन का जीवन विवादों से अछूता नहीं रहा।

१९९३ के झामुमो रिश्वत कांड में उनका नाम आया।

१९९४ में निजी सचिव की हत्या के मामले में जेल भी जाना पड़ा, लेकिन बाद में वे बरी हो गए।

फिर भी उनकी जन-लोकप्रियता पर कोई असर नहीं पड़ा। शिबू सोरेन केवल एक नेता नहीं, एक विचारधारा थे। वे आदिवासी समाज के प्रतिनिधि और संघर्ष के प्रतीक रहे। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि आदिवासियों की पहचान, जमीन और जल-जंगल पर अधिकार सुरक्षित रहें। उनकी विचारधारा में प्रकृति, न्याय और समानता सर्वोपरि रहे।

श्रद्धांजलि और अंतिम संस्कार

उनकी मृत्यु पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, विपक्ष के नेताओं, राज्य सरकारों और हज़ारों आम लोगों ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

सोमवार को राज्यसभा की कार्यवाही भी वर्तमान सांसद शिबू सोरेन के निधन के बाद उनके सम्मान में पूरे दिन के लिए स्थगित कर दी गई। झारखंड विधानसभा का मौजूदा मानसून सत्र उनके निधन की घोषणा के बाद अनिश्चितकाल के लिए स्थगित कर दिया गया। मानसून सत्र एक अगस्त से शुरू हुआ था। विधानसभा अध्यक्ष रवींद्रनाथ महतो ने कहा कि सोरेन का निधन न केवल झारखंड के लिए, बल्कि पूरे देश के लिए एक अपूरणीय क्षति है। सदन की ओर से शोक व्यक्त करते हुए महतो ने कहा, ''वह गरीबों के लिए अपनी लड़ाई के लिए जाने जाते थे।''

राज्य सरकार ने ३ दिन का राजकीय शोक घोषित किया।

उनका पार्थिव शरीर दिल्ली से रांची लाया गया और फिर उनके पैतृक गाँव नेमरा (रामगढ़ जिला) में पूरे राजकीय सम्मान के साथ ५ अगस्त को अंत्येष्टि हुई।

विरासत

आज उनके पुत्र हेमंत सोरेन राज्य के मुख्यमंत्री हैं, लेकिन JMM और झारखंड की आत्मा में आज भी 'गुरुजी' की विचारधारा ज़िंदा है। उन्होंने जिस सामाजिक न्याय, भूमि अधिकार और आदिवासी सम्मान की लड़ाई लड़ी, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनी रहेगी। शिबू सोरेन का जीवन एक संघर्षशील योद्धा की कहानी है। वे भारतीय लोकतंत्र में उन दुर्लभ नेताओं में से एक रहे जिन्होंने जमीनी आंदोलनों को संसद तक पहुँचाया।उनकी कमी न केवल झारखंड को, बल्कि पूरे देश को महसूस होगी। - एम.एन.

Published in: Swarnim Mumbai (Monthly Hindi Magazine)
Issue: August 2025 | Date: 5th August 2025 | Page No: 50